Plagiarism Checker X - Report

Originality Assessment

1%

Overall Similarity

Date: Dec 1, 2023
Matches: 7 / 1340 words
Sources: 1

Remarks: Low similarity detected, consider making necessary changes if needed.

Verify Report:
Scan this QR Code

शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य की भूमिका

डॉ० नीलम कैथल
शिक्षक-शिक्षा विभाग
असिस्टेंट प्रोफेसर
जे.एस.विश्वविद्यालय
शिकोहाबाद, फिरोजाबाद

सारांश- भारतवर्ष में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् शिक्षा जगत में एक प्रकार की क्रांति आई है। इस क्रांति का प्रमुख उद्देश्य ज्ञान के क्षेत्र तथा कार्य के क्षेत्र के मध्य जो अंतर पाया जाता है उसको कम करना है। इस उद्देश्य के लिए यह ध्यान रखा जाता है कि शिक्षा के माध्यम से बालकों में इस प्रवाह की योग्यता का प्रादुर्भाव समाज उपयोगी उत्पादक कार्य के माध्यम से हो सके। शिक्षा प्राप्त होने के बाद वह समाज एवं राष्ट्र का एक उपयोगी नागरिक कहलाया जा सके। समाजसेवक, शिक्षाविद्, विद्वान एवं राष्ट्र निर्माता शिक्षकों आदि ने गहन अध्ययन एवं मंथन के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि पाठ्यक्रम का क्षेत्र समाज उपयोगी उत्पादक कार्य पर आधारित होना चाहिए। समाज उपयोगी उत्पादक कार्य बालक और समुदाय की आवश्यकता पूर्ति से संबंधित अर्थपूर्ण कार्य है, जिसका परिणाम वस्तु निर्माण या ऐसे सेवा कार्य से है जो समुदाय के लिए उपयोगी सिद्ध हो।

मुख्य शब्द- समाज उपयोगी कार्य, शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थान, आत्मनिर्भर।

शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है और उसे जीवन में आने वाली चुनौतियों का सफलता से सामना करने के लिए तैयार करना है। इस हेतु समाज उपयोगी उत्पादक कार्य के द्वारा शिक्षक में विविध प्रकार की जानकारियां स्थापित की जाती हैं ताकि वह समाज को उन्नति के मार्ग पर अग्रसर कर सके। इन लक्ष्यों की पूर्ति के लिए विद्यालय शिक्षा पाठ्यक्रम में समाज उपयोगी उत्पादक कार्य की शिक्षा को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया। इस पर आधारित पाठ्यक्रम से बालक में श्रम के प्रति निष्ठा एवं रुचि उत्पन्न होने के साथ-साथ स्वावलंबन, सहयोग, जिज्ञासा, अध्यवसाय, तथा संयुक्त की भावना एवं कर्म निष्ठा जैसे मूल्यों का विकास हो सकेगा। समाज उपयोगी उत्पादक कार्य के संबंध में जब हमारा विचार आता है तो यह संप्रत्यय किसी से छिपा नहीं है कि एक कर्मयोगी ही जीवन में सफलता के चरमोत्कर्स को प्राप्त करता है कर्म करने वाले को सब कुछ मिल जाता है तथा जो कार्य नहीं करते अर्थात कर्म हीन को कुछ भी नहीं मिलता। कर्म ही प्रधान है जो जैसा करता है, वही पता है। रोजगार परक शिक्षा के लिए कार्य अनुभव की शिक्षा मील का पत्थर है।

समाज उपयोगी उत्पादक कार्य की शिक्षा के फल स्वरुप बालकों में अपना काम स्वयं करने की आदत

पैदा हो जाती है। फल स्वरुप व छोटे-छोटे कार्यों के लिए दूसरों पर आश्रित नहीं रहते इसके अध्ययन के उपरांत छात्रों में अनेक प्रकार की दक्षताएं तथा क्षमताएं विकसित हो जाती हैं और वे शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात इधर-उधर नहीं भटकते। अपितु कार्य कौशल के आधार पर स्वयं आजीविका अर्जित करने में सक्षम हो जाते हैं यही इसकी पूर्ण अवधारणा है। व्यवसाय के प्रति निष्ठा उत्पन्न करने के लिए कोठारी आयोग ने भी समाज उपयोगी उत्पादक कार्य की संकल्पना प्रस्तुत की है इसका मूल आधार है विद्यार्जन तथा धनार्जन की प्रक्रिया को साथ-साथ संपन्न करना वास्तविकता यह है कि इनके माध्यम से श्रम तथा कर्तव्य के प्रति निष्ठा का दृष्टिकोण विकसित होता है। इससे छात्रों को वयस्क होने पर अपने जीवन यापन में सहायता मिलती है। आर्थिक संपन्नता हेतु व्यावसायिक शिक्षा के लिए सामाजिक उपयोगी उत्पादक कार्य शिक्षा एक संबल प्रदान करती है। कोठारी आयोग के अनुसार इसमें निम्नलिखित उद्देश्य है-

1- रोजगार एवं शिक्षा का संबंध होना।

2- व्यक्ति को जीवन यापन के लिए कार्यालय की अपेक्षा अपने हाथों पर निर्भर रहना।

3- जनशक्ति का उपयोग कर देश की आर्थिक स्थिति को सुधारना।

4- शिक्षा के उद्देश्य का दृष्टिकोण विकसित करना और विद्यार्थियों को आभास कराना कि राष्ट्र निर्माण के लिए उनकी आवश्यकता है।

5- भारतीय परिस्थितियों एवं स्रोतों का उचित उपयोग किया जाना।

माध्यमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम एवं पाठ्य पुस्तकों पर सुझाव देने हेतु ईश्वर भाई पटेल 1977 [1] समिति का गठन किया गया। समिति ने समाज उपयोगी कार्य को नवीन संदर्भ में सोच विचार कर समाज उपयोगी उत्पादक कार्य एवं समाज सेवा को प्रस्तुत किया। समिति ने अपने महत्वपूर्ण अनुशंसाओं में इस बात पर बल दिया कि विद्यालय शिक्षा के सभी स्तरों पर शिक्षा क्रम में समाज उपयोगी उत्पादक कार्य को केंद्रीय स्थान दिया जाए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति सन 1986 ई के संदर्भ में समाज उपयोगी उत्पादक कार्य अनुभव को व्यावसायिक कार्य का आधार देने की संकल्पना की गई है। कार्य में कुशलता हाथ से कार्य करने की आदत एवं श्रम के प्रति निष्ठा को आवश्यक माना गया है। पूर्व में इस विषय की अधिगम प्रवृत्तियों के लिए सत्र में 30 कालांश दिए जाने की व्यवस्था थी परंतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति की क्रियान्विति हेतु बने पाठ्यक्रम में इस विषय को 12% समय दिए जाने की अनुशंसा की गई है उच्च प्राथमिक स्तर पर तीन दिवस एवं सेकेंडरी स्तर पर प्रत्येक सत्र पांच दिवसीय शिविर लगाना अनिवार्य किया गया है।

समाज उपयोगी उत्पादक कार्य की आवश्यकता- पुस्तकों से संपूर्ण ज्ञान संचित है। सभी छात्र उसे

पढ़ते हैं किसी भी विषय का पढ़ना उनके लिए तभी सार्थक सिद्ध होता है जब सीखे हुए ज्ञान को वे अपने जीवन में प्रयोग कर सके। दैनिक जीवन से संबंधित अनेकों ऐसे कार्य हैं जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिए और ऐसे कार्यों को करने की क्षमता भी होनी चाहिए। सत्रीय कार्य इन्हीं तथ्यों का ज्ञान कराने एवं छात्रों में कुशलताओं रुचियां एवं क्षमताओं का विकास करने के लिए यह आवश्यक है। यह विषय न केवल आधारभूत क्षमताओं को विकसित करता है अपितु ऐसे कुशलताएं एवं क्षमताएं पैदा करता है कि छात्र इसके अंतर्गत प्राप्त अनुभवों एवं कुशलताओं के आधार पर स्वयं को आत्मनिर्भर बनाकर अपनी आजीविका को स्वयं अर्जित कर सकते हैं।

हमारे राष्ट्र में समाज उपयोगी उत्पादक कार्य की पाठ्यक्रम को अपनाया गया है, जिससे छात्र-छात्राओं को आपस में मिलजुल कर काम करने का अवसर मिलता है इससे छात्र-छात्राओं में श्रम के प्रति निष्ठा, सामाजिक दृष्टि का विकास एवं आत्मनिर्भरता आदि मूल्यों का विकास होगा। यह पाठ्यक्रम उन्हें समुदाय की समस्याओं से परिचित कराता है और उनका हल खोजने के लिए प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार यह छात्रों को समाज का उपयोगी सदस्य बनने में सहायता करते हैं। समाज उपयोगी उत्पादक कार्य के अंतर्गत छात्रों को कक्षा में सिखाए गए कार्यों के अतिरिक्त उनको कुछ दिन के लिए शिविर में रहना अनिवार्य किया गया है, जिससे उसे कुछ दिन घर छोड़कर अपने साथियों के साथ थोड़ा कठिन जीवन व्यतीत करने का अभ्यास होता है। समाज उपयोगी उत्पादक कार्य प्राथमिक शिक्षा के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है

यह विषय छात्रों में श्रम के प्रति निष्ठा, स्वावलंबन, मानवीय मूल्य एवं सहयोग की भावना आदि गुणों का विकास करते हुए, सृजनात्मकता की आदत का निर्माण और संवेदनशीलता आदि के गुण विकसित कर जीवन से संबंध रखने वाली अनेक महत्वपूर्ण कुशलताओं और क्षमताओं का विकास कर देश की परिस्थितियों के अनुकूल इस विषय के सभी कार्य जैसे कृषि कार्य, बढई का कार्य, मिट्टी के खिलौने एवं अनउपयोगी वस्तुओं से उपयोगी वस्तुएं बनाने संबंधी कार्य न केवल उत्पादक है अपितु व्यक्ति एवं समाज की आवश्यकता की पूर्ति करने वाले भी होते हैं। इन कार्य अनुभव संबंधी कार्यों के साथ-साथ समाज सेवा संबंधी कार्य जैसे सामाजिक उत्सव में भाग लेना मेलों और प्रदर्शनियों में भाग लेकर जन सेवा का कार्य करना, श्रमदान द्वारा स्थानीय निवासियों के हित में कार्य करना यथा मार्गों को ठीक करना नदियों की निकास व्यवस्था को सुधारना एवं जल स्रोतों के आसपास अस्वच्छता को हटाना आदि तथा विद्यालय सौंदर्यीकरण में सहयोग देना इत्यादि कार्य समाज हेतु उपयोगी कार्यों में आते हैं।

निष्कर्ष- समाज उपयोगी उत्पादक शिक्षण कार्य में क्रियात्मक कार्यों का बहुत महत्व है जिससे शिक्षण को सरल, रुचि पूर्ण और सुगम बनाया जाता है तथा विद्यार्थी में उत्सुकता का संचार होता है वह

बिना किसी भय या हिचकीचाहट के प्रश्न का उत्तर प्राप्त करता या देता है यहां पर यह आवश्यक है कि प्राध्यापक को विषय में पारंगत होने के साथ प्रक्रियात्मक पक्ष में भी सुदृढ़ होना चाहिए तभी हम छात्र के स्तर को ऊंचाइयों तक ले जा सकते हैं और शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों को शिक्षण के प्रत्येक पहलू को बारीकी से ज्ञात कर आगे बढ़ना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1- शर्मा, श्रीमती राजकुमारी (2012) : समाज उपयोगी उत्पादक कार्य, राधा प्रकाशन, आगरा।

2- भट्टाचार्य, डॉ० जी०सी० (2010) : अध्यापक शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।

3- वशिष्ठ, डॉ० के०सी० (2020) : समाज उपयोगी उत्पादक कार्य, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

Sources

1	https://bharatdiscovery.org/india/भारत_में_शिक्षा_का_विकास INTERNET 1%	

EXCLUDE CUSTOM MATCHES	OFF
EXCLUDE QUOTES	ON
EXCLUDE BIBLIOGRAPHY	ON